

## श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 10: देवासुर युद्ध

14 September 2026



जब असुरों की रची माया देवसेना को अभिभूत कर देती है — पर्वत, अग्नि और जल कहीं से भी उठते हुए — तब देवता भगवान को स्मरण करते हैं। तत्काल वे अष्टभुज रूप में गरुड़ पर प्रकट होते हैं, और माया जागरण पर स्वप्न-सी विलीन हो जाती है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञम में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। देवताओं द्वारा अमरत्व का अमृत जीत लिए जाने और असुरों को उससे वंचित रह जाने पर, महान मन्थन की वह अस्थिर सन्धि सागर-तट पर खुले युद्ध में टूट जाती है। आठवें स्कन्ध के इस दशम अध्याय के हृदय में एक ही देदीप्यमान सत्य है: कि जब मानवीय बल और युक्ति पूर्णतः विफल हो जाती है, तब भगवान का स्मरण हर संकट को दूर कर देता है, जैसे जागरण स्वप्न को मिटा देता है।

### अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)

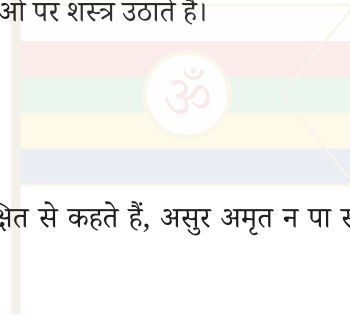
- अध्याय: 10 (दशम अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: देवता और असुरों का युद्ध
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: क्षीरसागर के निकट सागर-तट, युद्धभूमि
- केन्द्रीय विषय: मन्थन के पश्चात देवताओं और असुरों का युद्ध; असुरों की माया; भगवान का प्राकट्य, जो माया को दूर करते और देवताओं की रक्षा करते हैं
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 10, श्लोक 1-57
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

## पिछले अध्याय का सन्दर्भ

नवम अध्याय में भगवान ने अपने मोहक रूप में अमरत्व का अमृत देवताओं को दिया और असुरों को उससे वंचित रखा, और वेशधारी राहु का शिरच्छेद हुआ। श्रीशुकदेव ने निष्कर्ष दिया कि देवता इसलिए विजयी हुए क्योंकि उन्होंने भगवान के चरण-कमलों की शरण ली। यह अध्याय उसके पश्चात की घटना उठाता है: अमृत से वंचित और ईर्ष्या से भरे असुर देवताओं पर शस्त्र उठाते हैं।

## असुर कूच करते हैं और युद्ध आरम्भ होता है

क्योंकि उन्होंने भगवान वासुदेव से मुख मोड़ लिया था, श्रीशुकदेव राजा परीक्षित से कहते हैं, असुर अमृत न पा सके, यद्यपि उन्होंने एकजुट होकर उसके लिए कठोर श्रम किया था।



श्रीशुक उवाच

इति दानवदैतेया नाविन्दन्नमृतं नृप ।

युक्ताः कर्मणि यत्ताश्च वासुदेवपराङ्मुखाः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच इति दानवदैतेया नाविन्दन्नमृतं नृप युक्ताः कर्मणि यत्ताश्च वासुदेवपराङ्मुखाः

अर्थ: श्रीशुक ने कहा — इस प्रकार, हे राजन, असुर — यद्यपि एकजुट और अपने कार्य में परिश्रमी थे — अमृत न पा सके, क्योंकि उन्होंने भगवान वासुदेव से अपना मुख मोड़ लिया था। (स्कन्ध 8, अध्याय 10, श्लोक 1)

देवताओं को अमृत पिला देने के पश्चात भगवान गरुड़ पर आरूढ़ होकर प्रस्थान कर गए, और समस्त प्राणी उन्हें निहारते रहे। तब असुर, अपने प्रतिद्वन्द्वियों के महान सौभाग्य को सह न पाते और ईर्ष्या से जलते हुए, शस्त्र उठाकर देवताओं पर कूच कर पड़े।



अमृत से वंचित और ईर्ष्या से जलते असुर अपने अस्त्र-शस्त्र उठाकर देवताओं के विरुद्ध कूच करते हैं, और सागर-तट पर एक महायुद्ध छिड़ जाता है (श्लोक 1-5)।

अमृत से वंचित और ईर्ष्या से भरे असुर अपने शस्त्र उठाकर देवताओं पर कूच करते हैं, और सागर-तट पर एक महान युद्ध छिड़ जाता है (श्लोक 1-5)।

## अमृत से पुनः बलवान, देवता शरण लेते हैं

पिए हुए अमृत से बलवान होकर भी देवताओं ने इस आक्रमण का सामना अपने बल के अभिमान से नहीं किया। उन्होंने भगवान नारायण के चरणों की शरण ली और एकजुट प्रतिरोध किया।

ततः सुरगणाः सर्वे सुधया पीतयैधिताः ।

प्रतिसंयुयुधुः शस्त्रैर्नारायणपदाश्रयाः ॥ ४ ॥

ततः सुरगणाः सर्वे सुधया पीतयैधिताः प्रतिसंयुयुधुः शस्त्रैर्नारायणपदाश्रयाः

अर्थ: तब समस्त देवता, पिए हुए अमृत से बलवान होकर और भगवान नारायण के चरणों की शरण लेकर, अपने शस्त्रों से प्रतिकार में युद्ध करने लगे। (स्कन्ध 8, अध्याय 10, श्लोक 4)

वहाँ सागर-तट पर एक भयंकर, आमने-सामने का द्वन्द्व छिड़ा, वह प्रसिद्ध देवासुर संग्राम। क्रोध से भरे मन से दोनों दल निकट भिड़े, तलवारों, बाणों और हर प्रकार के शस्त्रों से एक-दूसरे पर प्रहार करते हुए, शंखों, नगाड़ों, चिंघाड़ते हाथियों, हिनहिनाते अश्वों और खड़खड़ाते रथों की गर्जना के बीच। योद्धा से योद्धा, रथ से रथ भिड़ गए, और दोनों सेनाएँ — अनेक रंगों की चमकीली ध्वजाओं, श्वेत छत्रों, हिलते चँवरों, दमकते कवचों और सूर्य में चमकते शस्त्रों से सुसज्जित — दो महासागरों की भाँति शोभित हुई।



अमृत से बलवान किन्तु भगवान नारायण के चरणों की शरण लिए हुए, देवता अपनी सेना सजाते हैं और असुरों का प्रचण्ड पर अनुशासित प्रतिकार करते हैं (श्लोक 4-15)।

अमृत से बलवान होकर भी नारायण के चरणों की शरण लेते हुए, देवता अपनी सेना सजाते हैं और असुरों का प्रचण्ड किन्तु अनुशासित प्रतिरोध करते हैं (श्लोक 4-15)।

## वीर एकल युद्ध में भिड़ते हैं

असुर सेना के सेनापति के रूप में विरोचन-पुत्र महाबली बली थे, जो अपने अद्भुत विमान वैहायस पर आरूढ़, अपने सेनानायकों से घिरे थे। उनके चारों ओर महान असुर सेनापति सजे थे — नमुचि, शम्बर, बाण, विप्रचित्ति और अनेक अन्य — जिन्होंने अपने समस्त श्रम पर अमृत का कोई भाग न पाकर सिंहनाद किया और शंख फूँके। अपने शत्रुओं को इतने गर्व से भरे देखकर इन्द्र क्रुद्ध हुए; महागज ऐरावत पर आरूढ़ और लोकपालों — वायु, अग्नि, वरुण आदि — से घिरे हुए, वे पूर्वाचल पर उदित होते सूर्य की भाँति शोभित हुए।

फिर वीर एकल युद्ध में भिड़े, जोड़ी-दर-जोड़ी: बली इन्द्र से; वरुण हेति से; यम कालनाभ से; सूर्यदेव बली के पुत्रों से; चन्द्रदेव राहु से; और भगवान शिव जम्भ से। चुनौतियों और मर्मभेदी वचनों के साथ एक-दूसरे के निकट आकर, दोनों दलों के नायक तीक्ष्ण बाणों, तलवारों और लौह-गदाओं से प्रहार करने लगे, प्रत्येक विजय को आतुर।



असुर सेना का सेनापति असुरराज बली इन्द्र से द्वन्द्व-युद्ध करता है, जबकि दोनों पक्षों के महारथी युद्धभूमि में आमने-सामने जुट जाते हैं (श्लोक 16-40)।

असुर सेना के सेनापति असुरराज बली इन्द्र से एकल युद्ध में भिड़ते हैं, जबकि दोनों दलों के महान वीर युद्धभूमि में जोड़ियों में लड़ते हैं (श्लोक 16-40)।

## बली की माया और देवताओं की व्यथा

बली ने इन्द्र पर बाणों की झड़ी लगाई, पर इन्द्र ने, तत्पर और मुस्कराते हुए, बली द्वारा उठाए हर शस्त्र — भाला, शूल, गदा और तलवार — को काट दिया। हताश होकर बली दृष्टि से ओझल हो गया और अपनी आसुरी माया-शक्ति छोड़ी। सहसा देवसेना के ऊपर एक पर्वत प्रकट हुआ, जलते वृक्ष और नुकीली चट्टानें बरसाता; फिर हिंस्र पशु और सर्प दौड़ पड़े; फिर भयंकर राक्षस और डरावनी आकृतियाँ हर ओर चीत्कार करने लगीं। गरजते बादलों ने अंगारे बरसाए; वायु से भड़की एक विशाल, सर्वग्रासी अग्नि देवसेना को प्रलयकाल की भाँति जलाने लगी; और घोर भँवरों तथा ऊँची लहरों वाला एक सागर उन्हें डुबोने लगा। इन रची हुई भयावहताओं से, और अन्य माया-निपुण असुरों की माया से, जिनकी गति तक न देखी जा सकती थी, घिरकर देवसैनिक हतोत्साह और असहाय हो गए।

## भगवान प्रकट होते हैं और माया विलीन हो जाती है

जब इन्द्र और देवता इस अनिष्ट का कोई प्रतिकार न खोज सके, तब उन्होंने विश्व के रक्षक भगवान को स्मरण किया — और तत्काल वे युद्धभूमि में प्रकट हुए।

ततः सुपर्णासकृताङ्घ्रिपल्लवः

पिशङ्गवासा नवकज्जलोचनः ।

अदृश्यताष्टायुधबाहुरुल्लस-

च्छ्रीकौस्तुभानर्घ्यकिरीटकुण्डलः ॥ ५४ ॥

ततः सुपर्णासकृताङ्घ्रिपल्लवः पिशङ्गवासा नवकञ्जलोचनः अदृश्यताष्टायुधबाहुरुल्लसच्छ्रीकौस्तुभानर्घ्याकिरीटकुण्डलः

अर्थ: तब भगवान प्रकट हुए, उनके कोमल कमल-से चरण गरुड़ के कन्धों पर रखे, पीत वस्त्र धारण किए, नेत्र नवीन कमलों के युगल-से, आठ भुजाएँ शस्त्र धारण किए, और श्री देवी, कौस्तुभ मणि, अमूल्य मुकुट तथा जगमगाते कुण्डलों से देदीप्यमान। (स्कन्ध 8, अध्याय 10, श्लोक 54)

जिस क्षण भगवान युद्धभूमि में प्रविष्ट हुए, असुरों की माया से रची भयावहताएँ उनकी महिमा के समक्ष विलीन हो गई — जैसे सोता हुआ मनुष्य जागते ही स्वप्न टूट जाता है।

तस्मिन्प्रविष्टेऽसुरकूटकर्मजा

माया विनेशुर्महिना महीयसः ।

स्वप्नो यथा हि प्रतिबोध आगते

हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम् ॥ ५५ ॥

तस्मिन्प्रविष्टेऽसुरकूटकर्मजा माया विनेशुर्महिना महीयसः स्वप्नो यथा हि प्रतिबोध आगते हरिस्मृतिः सर्वविपद्विमोक्षणम्

अर्थ: ज्यों ही वे प्रविष्ट हुए, असुरों की छल-रचित माया उस महान भगवान की शक्ति से नष्ट हो गई, जैसे जागने पर स्वप्न समाप्त हो जाता है; क्योंकि श्रीहरि का स्मरण मात्र ही समस्त संकटों से मुक्ति है। (स्कन्ध 8, अध्याय 10, श्लोक 55)

यहीं श्रीशुकदेव परीक्षित के लिए, और हमारे लिए भी, गहरी बात कह रहे हैं। अमृत ने देवताओं को पहले ही अमर और बलवान बना दिया था, फिर भी वह बल बली की माया से उनकी रक्षा न कर सका; केवल भगवान का स्मरण ही कर सका। इस अध्याय की सम्पूर्ण गति इसी एक व्यवस्था पर टिकी है: असुरों ने अमृत का अधिकार इसलिए खोया क्योंकि उन्होंने वासुदेव से मुख मोड़ लिया था (श्लोक 1), और देवता, अमृत पीने के बावजूद, युद्ध लगभग हार ही चुके थे, जब तक कि अपनी किसी युक्ति को पर्याप्त न पाकर उन्होंने अपना मन पुनः उनकी ओर नहीं मोड़ा (श्लोक 53-55)। सबसे बड़ा वरदान भी उस हृदय का स्थान नहीं ले सकता जो अपने दाता को निरन्तर स्मरण रखता है; समर्पण के बिना बल कुछ भी सुरक्षित नहीं करता।

भगवान को गरुड़ पर देखकर असुर कालनेमि ने अपना शूल फेंका, पर भगवान ने उसे लीलावश पकड़ लिया और उसी से उसे उसके सिंह-वाहन सहित नष्ट कर दिया। और जब असुर माल्यवान गरुड़ पर प्रहार करने दौड़ा, तब भगवान ने अपने चक्र से उस गरजते शत्रु का सिर काट दिया, जैसे वे पहले महाबली माली और सुमाली को गिरा चुके थे। भगवान की उपस्थिति से असुरों का आक्रमण भंग हो गया।



ज्यों ही अष्टभुज भगवान गरुड़ पर प्रकट होते हैं, असुरों द्वारा रचे पर्वत, अग्नि और जल-प्रलय जागरण पर स्वप्न के समान विलीन हो जाते हैं, और देव-सेना का उद्धार होता है (श्लोक 53-57)।

जिस क्षण अष्टभुज भगवान गरुड़ पर प्रकट होते हैं, असुरों की रची पर्वत, अग्नि और जल की माया जागरण पर स्वप्न-सी विलीन हो जाती है, और देवसेना की रक्षा हो जाती है (श्लोक 53-57)।

## इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान का स्मरण हर संकट को दूर करता है। जब देवताओं की कोई युक्ति असुरों की माया का प्रतिकार न कर सकी, तब श्रीहरि का स्मरण मात्र उनकी उपस्थिति ले आया, और माया विलीन हो गई। मन को भगवान की ओर मोड़ना ही मुक्ति है (श्लोक 55)।
2. बल तभी सुरक्षित है जब वह शरण लेता है। देवता अमृत से पुनः बलवान थे, फिर भी उन्होंने “नारायण के चरणों की शरण लेकर” युद्ध किया। भगवान के चरणों की शरण में रखा बल अभिमान नहीं बनता (श्लोक 4)।
3. माया सत्य के प्रकाश में टिक नहीं सकती। असुरों की रची पर्वत, अग्नि और जल की माया भयावह पर असत्य थी, और भगवान के समक्ष तत्काल विलीन हो गई — जैसे जागरण पर स्वप्न। जो विस्मृति में हमें डराता है वह उनकी उपस्थिति में शक्तिहीन हो जाता है (श्लोक 55)।
4. ईर्ष्या प्रयास को स्वयं के विरुद्ध कर देती है। असुरों ने देवताओं जितना ही श्रम किया था, पर दूसरों के सौभाग्य से ईर्ष्या ने उन्हें युद्ध और विनाश की ओर धकेला। दूसरे के वरदान से द्वेष स्वयं का ही नाश है (श्लोक 3)।
5. भगवान से मुख मोड़ना फल को खोना है। असुरों को अमृत इसलिए न मिला क्योंकि उन्होंने वासुदेव से मुख मोड़ लिया था। प्रयास कितना भी महान हो, भगवान की विस्मृति उसे फल से रिक्त कर देती है (श्लोक 1)।

## एक भाक्तेमय चिन्तन

इस भीड़-भरे युद्ध का सबसे शक्तिशाली क्षण शस्त्रों का टकराव नहीं, अपितु मन का परिवर्तन है। अधिकांश अध्याय में देवता, स्वाभाविक ही, अपने शस्त्रों और वीरों पर निर्भर रहते हैं; वे बलवान, अभी-अभी अमर, और सुनेतृत्वयुक्त हैं। फिर भी असुरों की माया के समक्ष यह सब व्यर्थ सिद्ध होता है। रिक्त आकाश से पर्वत गिरते हैं, शून्य से अग्नि भड़कती है, जहाँ सागर नहीं वहाँ सागर उठता है — और देवता, अपने समस्त बल के बावजूद, असहाय और भयभीत हो जाते हैं। अन्ततः जो उन्हें बचाता है वह कोई श्रेष्ठ शस्त्र नहीं, अपितु हृदय का मुड़ना है: वे भगवान को स्मरण करते हैं। और जिस क्षण वे ऐसा करते हैं, वे वहाँ होते हैं, और वह समस्त भयावह दृश्य भोर में स्वप्न-सा ढह जाता है। श्रीशुकदेव बिना किसी आवरण के शिक्षा देते हैं: हरि को केवल स्मरण कर लेना ही हमें हर उस चीज़ से मुक्त करने के लिए पर्याप्त है जो हमें भयभीत करती है। हमारी अपनी माया भी उतनी ही अभिभूत करने वाली हो सकती है: हम पर छाते भय, कहीं से भी आते प्रतीत होते संकट, मन को जलाती और डुबाती चिन्ताएँ। यह अध्याय वचन देता है कि वे भी स्वप्न हैं जो भगवान के स्मरण के जागृत प्रकाश में टिक नहीं सकते। जब माया सबसे अधिक दबाव डाले, तब हम जो सबसे बलवान कार्य कर सकते हैं वह है सरलता से मन को उनकी ओर मोड़ना।

## एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज जब कोई चिन्ता या भय उठे और आप पर छाता हुआ प्रतीत हो, तब रुककर धीरे से अपना मन भगवान की ओर मोड़ें, यह स्मरण करते हुए कि असुरों की विशाल माया उनके प्रकट होते ही विलीन हो गई थी। धीरे से “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय” दोहराएँ, और उस स्मरण को अपनी शरण बनने दें, जैसे देवताओं ने नारायण के चरणों की शरण ली। देखें कि उनके स्मरण के प्रकाश में उठाया गया भय अपनी भयंकर ठोसता खोने लगता है, जैसे जागरण पर स्वप्न धुँधला पड़ जाता है।

## उपसंहार

शस्त्र, माया, यहाँ तक कि सम्पूर्ण सेना की निराशा भी — कुछ भी टिक न सका जब देवताओं ने अपना मन भगवान की ओर मोड़ा, और हमारे जीवन में भी, जब हम वही करते हैं, कुछ भी हमारे विरुद्ध नहीं टिकता। हमारे अपने जीवन में उठा जो भी भय-पर्वत हो, चाहे वह कितना ही अन्धकारमय और अकारण प्रतीत हो, वह बली की रची माया से अधिक ठोस नहीं है; वह भी उसी क्षण विलीन हो जाता है जब हम सच्चे मन से भगवान को स्मरण करते हैं। वह स्मरण युद्ध में हो या शान्ति में, हमें कभी न छोड़े। असुरों की माया भंग होने और उनके सेनापतियों के गिरने पर इस युद्ध की धारा मुड़ चुकी है — और इन्द्र तथा बली का अधूरा द्वन्द्व अगले अध्याय में आगे बढ़ता है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जाग्रत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

## सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, दशम अध्याय, पृष्ठ 775–780।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम् • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।

- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुरूप प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी तथा लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश-रूप में हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक से किसी सम्बद्धता अथवा उसके अनुमोदन का संकेत नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: [kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-10-the-battle-between-the-gods-and-the-demons-hi.html](http://kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-10-the-battle-between-the-gods-and-the-demons-hi.html)

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

